रोजगार पर कुंडली मारकर बैठी है स्वयं खट्टर सरकार

हरियाणा सरकार के 93 विभागों में 1 लाख 82 हजार 497 पद रिक्त पड़े हैं

चंडीगढ (मज़दूर मोर्चा ब्यूरो)

हरियाणा सरकार की अधिकृत वेवसाइट पर डाली गई सूचना के अनुसार सरकार के कुल 93 विभागों में 4 लाख 45 हजार 346 स्वीकृत पद हैं। इनमें से 2 लाख 62 हजार 849 पद भरे हुए हैं तथा शेष 1 लाख 82 हजार 497 पद बीते कई वर्षों से रिक्त पड़े हैं। विदित है कि किसी भी सरकार में पदों का सर्जन रोजगार उपलब्ध कराने के लिये नहीं किया जाता बल्कि सरकारी मशीनरी को सुचारू ढंग से चलाये रखने के लिये पद सर्जित किये जाते हैं। ये तमाम पद सरकार रूपी मशीनरी के कल पूर्जों के समान होते हैं। जिस मशीन के आधे पूर्जे ही गायब हों तो वह मशीन ऐसे ही चलती है जैसे हरियाणा सरकार चल रही है।

'मज़दूर मोर्चा' बारी-बारी से इन तमाम विभागों का विषलेशन करते हुए यह बताने का प्रयास करेगा कि इन रिक्तियों से जनता पर क्या दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं। सबसे पहले लेते हैं शिक्षा विभाग। किसी भी देश की ताकत उसमें रहने वाले लोगों की बौद्धिक क्षमता एवं तकनीकी ज्ञान पर निर्भर करती है। जिस देश के लोग अनपढ़-गंवार एवं मूर्ख होंगे उस देश का बेड़ा गर्क होना तय है। इससे बचने के लिये शिक्षा का होना अनिवार्य है।

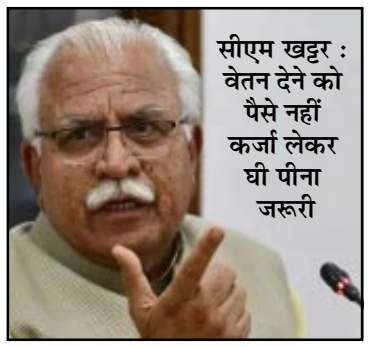

सीएम खट्टर : वेतन देने को पैसे नहीं कर्जा लेकर घी पीना जरूरी

हरियाणा में प्राइमरी शिक्षा के 90 हजार पद स्वीकृत हैं। इनमें से 38 हजार पद खाली पड़े हैं। सेकेंडरी शिक्षा के 63 हजार स्वीकृत पदों में से 25 हजार खाली पड़े हैं। उच्च शिक्षा यानी कि कॉलेज एवं यूनिवर्सिटी के 11 हजार स्वीकृत पदों में से 6 हजार पद खाली पड़े हैं। कुल मिलाकर शिक्षा विभाग में अध्यापकों के 1 लाख 64 हजार पदों में से 69 हजार पद खाली पड़े हैं। समझना कठिन नहीं है जहां पढ़ाने को पर्याप्त शिक्षक ही नहीं होंगे वहां का भविष्य क्या होगा?

हरियाणा के स्वास्थ्य विभाग में स्वीकृत पदों की कुल संख्या 22 हजार है। इनमें से 8 हजार पद खाली पड़े हैं। गौरतलब है कि ये पद भी बीसियों वर्ष पूर्व स्वीकृत किये गये थे। उसके बाद से आबादी बढ़ने के चलते स्वीकृत पदों की संख्या बढ़कर कम से कम दो गुणा हो जानी चाहिये थी। लेकिन दुर्भाग्य तो यह है कि पुराने स्वीकृत पद भी पूरे नहीं भरे जा रहे हैं।

राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही ईएसआई स्वास्थ्य सेवाओं में कुल 2500 स्वीकृत पद हैं जिनमें से 900 पद खाली पड़े हैं। इससे भी बड़ा दुर्भाग्य तो यह है कि ईएसआई नियमावली के अनुसार स्वीकृत पदों की संख्या ही कम से कम 15000 होनी चाहिये। ईएसआई मैनुअल (किताब) में बड़ा स्पष्ट लिखा है कि 2000 बीमाकृत मज़दूरों पर एक डॉक्टर, एक फार्मासिस्ट तथा पांच अन्य पैरा मेडिकल के अलावा आवश्यकता अनुसार चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी होने चाहियें। विदित है कि आज के दिन हरियाणा में करीब 29 लाख मज़दूरों से ईएसआई के नाम पर उनके वेतन का चार प्रतिशत वसूला जाता है।

रोहतक मेडिकल कॉलेज की स्थापना 1963 में हो चुकी थी। राज्य का सबसे पुराना मेडिकल कॉलेज अस्पताल होने के बावजूद भी यहां की चिकित्सा व्यवस्था के साथ-साथ पढ़ाई की व्यवस्था भी पूरी तरह से चरमाराई हुई है। यहां के फेकल्टी में 200 पद रिक्त हैं तथा इतने ही पद सीनियर रेजिडेंट्स के भी रिक्त पड़े हैं। इन पदों को रिक्त रख कर राज्य सरकार करीब वे 66 करोड़ रुपये बचा रही है जो उन्हें बतौर वेतन देने पड़ते। इसी तरह यहां पर नर्सों व अन्य स्टाफ़ के भी 1000 से भी अधिक पद खाली पड़े हैं। इसके द्वारा भी सरकार को सीधे-सीधे 60 करोड़ की बचत हो रही है।

उक्त स्थिति तो राज्य के सबसे पुराने एवं प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज, जो अब यूनिवर्सिटी भी बन चुका है, की है। बाकी बचे खानपुर, करनाल व मेवात तथा छांयसा स्थित मेडिकल कॉलेजों की हालत तो और भी दयनीय है। जिस ढंग से ये चल रहे हैं उसे चलना नहीं रेंगना कहा जाता है।

किसी भी कल्याणकारी राज्य के दो ही मुख्य दायित्व होते हैं, शिक्षा व चिकित्सा। इन दोनों ही दायित्वों का निर्वहन करने में भाजपा सरकार पूरी तरह से विफल है। इन दोनों ही विभागों को सही एवं सुचारू ढंग से चला कर जनता को आवश्यक सेवायें उपलब्ध कराने की अपेक्षा सर्वशिक्षा अभियान तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन जैसे नाटक चला रखे हैं। इन नाटकों के माध्यम से जनता के धन को बेदर्दी से लुटा जा रहा है।

संदर्भवश हरियाणा सरकार जनता से वसूले गये भारी-भरकम करों के अलावा कर्जा लेने के सभी रिकॉर्ड भी तोड़ चुकी है। पहली नवम्बर 1966 को हरियाणा पर कुल 2 करोड़ का कर्ज था। 31 मार्च 2014 तक यह कर्ज बढ़ कर 89 करोड़ हो गया था। लेकिन संघ प्रचारक से मुख्यमंत्री बने मनोहर लाल खट्टर ने 31 मार्च 20 22 तक 2 लाख 43 हजार करोड़ का कर्ज हरियाणा पर चढा दिया। अब सवाल पैदा होता है कि इस दौरान खट्टर सरकार ने जब नया कुछ बनाया नहीं और वेतन देने से बचने के लिये बड़ी संख्या में पदों को रिक्त रखा जा रहा है तो यह सारा पैसा जा कहां रहा है? जाहिर है कि सारा पैसा फ़र्जीवाड़े करके डकारा जा रहा है।

गुड़गांव में हजारों करोड़ के घोटाले की तैयारी अरावली पहाड़ों को बचाने की आड़ में

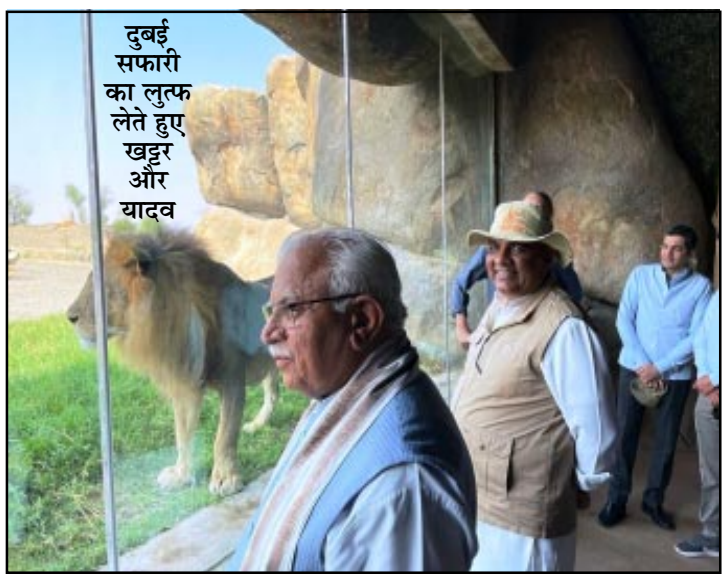

दुबई सफारी का लुत्फ लेते हुए खट्टर और यादव

पवन कुमार बंसल

दुबई से वापस आकर मुख्यमंत्री मनोहर लाल और केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव पहले शारजाह जंगल सफारी का दौरा करने पहुंचे, कहा कि गुड़गांव और नुह में 10000 एकड़ में विश्व का सबसे बड़ा सफारी पार्क बनेगा, कहा कि बहुत बड़ा पार्क बनेगा, शाकाहारी जानवरो का बड़ा क्षेत्र, विदेशी पशु पक्षियों का बड़ा क्षेत्र और ना जाने क्या-क्या बनेगा। कहा कि इससे लोगों को रोजगार मिलेगा और आसपास के गांव वालों को लाभ होगा।

सूत्रों ने बताया कि पर्दे के पीछे कुछ और ही है। सीएम बनने के बाद मनोहर लाल ने अरावली पर्वत बचाने के लिए कुछ नहीं किया सारे काम बिल्डरों के फायदे में किये। अब अचानक अरावली के प्रति प्रेम कैसे उमड़ पड़ा, सोचने की बात है।

राजनीतिक दबाव के चलते पुलिस ने नाबालिग लड़के को दिया थर्ड डिग्री

फरीदाबाद (म.मो.) अपने डंडे के बल पर लूट कमाई करने में माहिर स्थानीय पुलिस ने अपना नया कांड संत नगर निवासी 16 वर्षीय रौनक के साथ करके दिखा दिया है।

रौनक के चाचा मनोज ने इस संवाददाता को बताया कि उनके मोहल्ले में रहने वाली वंदना नामक एक बालिग लड़की अपने पड़ोसी दोस्त आशीष के साथ 20 सितंबर को घर बताए बगैर कहीं बाहर घूमने चली गई थी। इन दोनों के प्रेम प्रसंग के बारे में पूरा मोहल्ला जानता है। इसी प्रसंग को लेकर कुछ समय पूर्व वंदना और आशीष के परिवार वालों के बीच अच्छी खासी तकरार भी हुई थी।

आपदा को अवसर में बदलने वाले सिद्धांत पर चलते हुए वंदना के घर वालों ने पुलिस चौकी सेक्टर 16 में आशीष के विरुध रिपोर्ट तो दर्ज कराई ही साथ में कुछ उन लोगों के नाम भी लिखवा दिये जिनसे उनकी पुरानी रंजिश थी । इनमें से एक रौनक भी है। मनोज के अनुसार वंदना के चाचा की जान पहचान भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष अजय गॉड से हैं जो आजकल मुख्यमंत्री खट्टर के कलेक्शन एजेंट है।इसी राजनीतिक दबाव का सहारा लेकर वंदना के चाचा ने21 तारीख को रौनक को चौकी में बुलवाकर पूछताछ के नाम पर बुरी तरह से पिटवाया । उसी शाम मनोज चौकी से रौनक को जैसे-तैसे वापस ले आया।

इतने भर से शायद वंदना परिवार की संतुष्टि नहीं हुई थी, इसलिए पुलिस ने रोनक को पुन: 23 तारीख को फिर से बुला लिया। इस बार तो पुलिस ने हद ही कर दी, उसे इतना पीटा गया की उसका

रौनक : पुलिसिया दमन का शिकार

चाचा मनोज उसको कंधे पर उठाकर रिक्शे पर लादकर घर लेकर आया हालत खराब देख कर उसे बीके अस्पताल ले गया जहां से उसे सफदरजंग रेफर कर दिया गया। सफदरजंग वालों ने रौनक की पूरी कहानी सुनकर व हालत देखकर एमएलआर की मांग की जो उन्हें बीके अस्पताल से नहीं दिया गया था, लिहाजा वहां के अस्पताल में भी उसका इलाज नहीं किया। ऐसे में रौनक दिल्ली में ही अपने किसी रिश्तेदार के यहां रहकर जैसे तैसे अपना इलाज करा रहा है।

इस मामले पर पुलिस का पक्ष बताते हुए उनके प्रवक्ता ने बताया कि लड़के आशीष की ष्ठष्ठक्र(कॉल डिटेल रिपोर्ट) से पाया कि उसने 19.09.2022 को लास्ट कॉल अपने दोस्त रौनक को की है। जिसके संबंध में रौनक को दिनांक 24.09.2022 को पूछताछ के लिए चौकी बुलाया गया था। जिसमे लड़के रोनक ने बतलाया कि आशीष ने मुझे अपनी स्कूटी देने के लिए बुलाया था और मैं आशीष और वन्दना के बारे कुछ नही जानता हूं। जो रोनाक से पूछताछ गांव के मौजीज व्यक्तियों के सामने की थी, और बाद पुछताछ करके लड़के को सही सलामत मोजिज व्यक्तियों की हाजरी में फारिग किया गया था। रोनक से पुछताछ में पता चला था कि रौनक नशा करने का आदि है और जब नशा नहीं करता है तो उसकी तबियत खराब होने लगती है।

पुलिस की इस बात पर रौनक के चाचा मनोज ने बताया कि रोनक किसी तरह का कोई नशा नहीं करता था वह कभी कबार हुक्का ही पिया करता था।

पुलिस प्रवक्ता का बयान एकदम झूठा है। शायद प्रवक्ता को रखा ही इसी काम के लिए गया हो जो पुलिस के काले कारनामों पर पर्दा डाल सके। जिस रौनक को 21 व 23 तारीख को पुलिस चौकी में लाया गया था, उसे प्रवक्ता 24 तारीख बता रहे हैं। मोजिज आदमियों की मौजूदगी भी एकदम झूठ है। अब देखना यह है कि संबंधित पुलिस उच्चाधिकारी अपने इन बेलगाम जनविरोधी कर्मचारियों के खिलाफ क्या कार्यवाही करते हैं। संदर्भवश सुधी पाठक यह भी जान ले की प्रेमी जोड़ा लौट आया है। वंदना ने पुलिस को बयान दिया है कि वह बालिग है और अपनी मर्जी से आशीष के साथ घूमने गई थी। इसके बाद लड़के का मामा प्रेमी जोड़े को अपने घर ले गया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।